कुशाभाऊ ठाकरे

(जन्म 15 अगस्त 1922 देहावसान 28 दिसम्बर 2003)

एक ऐसा याज्ञिक जो स्वयं तो आहुति देता ही रहता है, आहुतियों की परम्परा को भी आहुत करता है। ऐसे व्यक्तित्व को प्रणाम एवं इस व्यक्तित्व में अन्तर्प्रतिष्ठित शिष्य को प्रणाम

कुशाभाऊ ठाकरे जी का जीवन वर्तिका धर्मी और उनका व्यक्तित्व दीपक धर्मी रहा है। एकनिष्ठ तपस्या के बल पर यह मृण्मय दीपक राष्ट्र के सार्वजनिक जीवन का "चिन्मय प्रदीप" बन चुका है। स्वयं जल कर भी आलोक विस्तार करते रहना ठाकरे जी के प्रदीप्त व्यक्तित्व की वृत्ति थी, उनका व्यवसाय और उनका लोक मंगल धर्मी सात्विक व्यसन भी था। इस दीपक में केवल प्रकाश सृष्टि और प्रकाश वृष्टि की वृत्ति नहीं थी, बल्कि यह प्रकाश के वंश के विस्तार में भी निरंतर प्रयत्नशील रहता था। उनके चिन्तन की सबसे बड़ी चिन्ता प्रकाश के वंश विस्तार को अविच्छिन्न परम्परा में परिणत कर देने की थी।

आलोक के लिये आकुल – व्याकुल इस प्रदीप्त चिन्ता, चिन्तन और तप–साधना को शतशः प्रणाम। श्रीफल के सदृश्य था ठाकरे जी का जीवन। मांगलिकता और सम्पूर्णता का पूज्य प्रतीक। बाहर से रूखा नीरस और अपने अन्दर तृप्तिकारी तरलता का कोष छिपाये हुये, इस तरलता में कविता की लय प्रवाहित होती है। इस कविता में संकल्प ही कल्पना तत्व है। अक्षत् राष्ट्रीय जीवन के क्षत्–विक्षत् अभाव ही इस कविता के भाव पक्ष हैं। संघर्ष की अदम्य लालसा ही अलंकार है। अकंपित कंठ से संकल्प की व्यंजना ही इस कविता की सांगीतिक लय है। यह कविता जिजीविषा को आयुविस्तार देकर अपनी सार्थकता सिद्ध करती है। कहा भी गया है कि सादगी, असलियत और जोश ही सच्ची कविता के विधायक तत्व होते हैं। ठाकरे जी के व्यक्तित्व में सादगी आकार ग्रहण करती थी, व्यवहार में प्रामाणिकता और जोश में उत्स, ठाकरे जी के व्यक्तित्व में तरंगायमान काव्य सलिला की प्रत्येक तरंग को प्रणाम्।

हमारी ऋषि परम्पराओं ने व्यक्ति और समाज के लिये जिन संस्कारों, मूल्यों और प्रतिमानों की परिकल्पना की है, ठाकरे जी का व्यक्तित्व और कृतित्व उनकी सारगंध से ओत–प्रोत एवं सुवासित है। त्याग की मूर्ति ठाकरे जी वेदान्त, व्याकरण एवं दर्शन के पण्डित रहे हैं। उनकी स्मृति में स्थापित व्याख्यानमाला द्वारा इस निष्काम कर्मयोगी की जीवन कविता को शतशः प्रणाम। वंदन अभिनन्दन।